

त्रिचतुःप्रभृति° VARĀH. BṚH. S. 46, 52.

संप्रकर्ष (von कर्ष mit संप्र) m. Freude MBh. 13, 392. HALĀJ. 5, 39.

°कर MBh. 6, 3531. R. 7, 63, 14.

संप्रकर्षिन् (wie oben) adj. sich freuend, froh R. 7, 37, 3.

संप्रकार (von कर् with संप्र) m. 1) Kampf AK. 2, 8, 3, 73. H. 796. a. n. 4, 282. MED. r. 302. HALĀJ. 2, 298. MBh. 2, 1977. 2115. 3, 16374. 8, 3290 (wohl संप्रकारे zu lesen). HARIV. 7546. R. 3, 30, 7. 43, 17. 7, 18, 15. BHĀG. P. 1, 13, 28. तयोः MBh. 3, 439. 11507. 12100. 4, 756. HARIV. 10329. R. 3, 33, 11. 56, 34. 6, 69, 26. PRAB. 87, 10. रथिनां रथिभिः MBh. 4, 1050. तेषां तैः सक्तु KATHĀS. 48, 105. mit acc. (!): तौ संप्रकारार्थमुद्यतः um dich zu bekämpfen R. 6, 4, 61. मदीय mit mir 4, 9, 72. नृप° (= नृपाणाम्) MBh. 6, 2631. पादात् PĀNĀT. ed. ORN. 57, 15. असुर° mit ÇĀK. 98, 14. संप्रकारं कर् MBh. 8, 442. R. 5, 63, 12. 6, 18, 20 (प्रकेनात्ति). प्र-कर् MBh. 6, 2121. द्वंद्व° Zweikampf: ईदृशेन सक्तु UTTARĀR. 93, 14. fg. (121, 8. 9). am Ende eines adj. comp.: गदाव्यापत्° RAGH. 7, 49. प्रवृत्तसंप्रकारत्वं KATHĀS. 15, 140. — 2) = प्रकार Schlag, Stoss u. s. w. R. 6, 98, 26. = कृन्तन DBHARĀṆI im ÇKDR. — 3) = गति H. a. n. MED.

संप्रकारि (wie oben) UGĒVAL. zu UṆĀDIS. 4, 124.

संप्रकारिन् (wie oben) adj. kämpfend R. 6, 73, 21.

संप्रकास (von कृष् mit संप्र) m. Gelächter, Scherz, Spott: क्रूरैः सुदृष्टैः संप्रकासः — न कायैः man darf nicht scherzen mit R. 3, 24, 20. mit acc. der Person Verspottung 23, 46.

संप्राप्तव्य (von घ्राप् mit संप्र) adj. zu erreichen, zu erlangen MBh. 3, 11640.

संप्राप्ति (wie oben) f. 1) Ankunft MBh. 1, 393. 603. R. GOAR. 1, 4, 136. in comp. mit dem Orte: सुतीक्ष्णाश्रम° 47. 52. 138. — 2) Eintritt: अद्भुत° eines Wunders ŚĪB. D. 401. in der Medicin Eintritt, Entstehung einer Krankheit: यथा दुष्टेन दोषेण यथा चानुविसर्पता । निर्वृत्तिरामयस्यासौ संप्राप्तिर्जातिरगतः ॥ MĀDHAVA, NID. 1, 19. Verz. d. Oxf. H. 305, b, 17. KĀRAKA 2, 1. — 3) das Gelangen zu, Erlangung, Gewinnung, das Theilhaftwerden MED. t. 3. विषयेषु SUÇR. 1, 230, 3. ईप्सितस्यान्नस्य MBh. 12, 13813. अलंकारस्य R. GOAR. 1, 4, 140. 21, 5 (20, 16 SCHL.). शक्रादरस्य 131. VARĀH. BṚH. S. 79, 22. 95, 24. शशाङ्कवत्याः KATHĀS. 100, 5. WILSON, ŚĪMKEBJAK. S. 11. पुण्यपापयोः MĀRK. P. 55, 22. in comp. mit seinem Object: क्षिप्रयभूमि° M. 7, 208. राज्य° MBh. 1, 7538. पुत्र° 2, 705. VARĀH. BṚH. S. 87, 1. 15. अग्निवाङ्मि° KATHĀS. 25, 72. 52, 207. MĀRK. P. 31, 22. धर्मार्थकाम° 35, 57. RĀGĀ-TAR. 3, 422. 6, 359. प्रसन्नलाप° 3, 154. मक्ताडुःख° Spr. (II) 8728. — Vgl. मित्र° (auch PĀNĀT. 104, 1).

संप्राप्तिद्वादशी f. Bez. eines best. zwölften Tages Verz. d. Oxf. H. 34, b, 14.

संप्रार्थना (von अर्थय् mit संप्र) f. das Begehren nach, das Bitten um: मुलभद्रव्यात्प° so v. a. das wenig-Fragen nach, keinen-Werth-Legen auf VARĀH. BṚH. S. 78, 4.

संप्रार्थ्य (wie oben) adj. wonach man begehrt oder worum man bitten muss H. a. n. 2, 344.

सैप्रिय (2. सम् + प्रिय) gaṇa राजन्यादि zu P. 4, 2, 53. 1) adj. einander liebend VS. 12, 52. ऀCV. GRHJ. 1, 7, 5. PĀR. GRHJ. 1, 6. संप्रियः पुणुभिर्भुवत् TB. 1, 1, 1. 8, 4. वृद्ध्यनि 2, 1, 17. — 2) f. आ N. pr. der Gattin Viddāratha's (Vidūra's ed. Bomb.) mit dem patron. Mādhavi MBh. 1, 3793. — 3) n. Befriedigung: लोकानां संप्रियार्थम् R. 7, 51, 18. — Vgl. सौ-

प्रियक.

संप्रीणन (vom caus. von 1. प्री mit सम्) n. das Ergötzen, Erfreuen BuĀC. P. 10, 82, 38.

संप्रीति (von 1. प्री mit सम्) f. 1) Freude, Lust, das Gefühl der Befriedigung: अनया सक्तु संप्रीतिमनुलां समवाप्नुक्ति MBh. 1, 3392. Spr. (II) 2749. MĀRK. P. 72, 8. राज्ये, नारीषु, वेदाध्ययनेषु MBh. 15, 585. स्तोत्रश्रवण° MĀRK. P. 97, 26. संप्रीत्या भुष्यतां राज्यम् मिः Lust, — Wohlbehagen MBh. 13, 549. °भोष्यान्धमानि 5, 3261. अ° Unlust 12, 8380. — 2) freundschaftliche Gesinnung, Freundschaft, Liebe R. GOAR. 2, 92, 4. सब्यादीन्संप्रीत्या गृहमागतान् M. 3, 113. 8, 146. KATHĀS. 72, 44. MĀRK. P. 125, 24. °मित्रवरणानि VARĀH. BṚH. S. 99, 6. परस्परम् Spr. (II) 6888. अर्जुने MBh. 4, 1492. 12, 1047. तस्य Liebe zu MĀRK. P. 20, 21. 21, 61. सुप्रीवेण Freundschaft mit R. 4, 14, 22. अनेन सक्तु HARIV. 6018.

संप्रीतिमत् (von संप्रीति) adj. froh, zufrieden MBh. 4, 938.

संप्रेतक (von इत् with संप्र) adj. zuschauend, Zuschauer HARIV. 4743.

संप्रेप्सु (vom desid. von घ्राप् mit संप्र) adj. anstrebend, verlangend nach: मुखं (so lesen wir) संप्रेप्सुः स्थानं मुचरितादति (अपि ed. Bomb.) MBh. 13, 1888. Jmd (acc.) beizukommen suchend, nachstellend 7, 647.

संप्रेरण (vom caus. von ईर् with संप्र) n. Aufforderung, Anweisung, Geheiss Verz. d. Oxf. H. 215, a, 8 v. u.

संप्रेष m. = संप्रीष H. 1520.

संप्रेषण (vom caus. von 1. इष् with संप्र) n. Sendung, Absendung: स्मरणीयो ऽस्मि भवता संप्रेषणनिषोन्नैः MBh. 12, 13926. दूत° M. 7, 153. KĀM. NITIS. 13, 46 (pl.). दूती° HARIV. 176 in der Unterschr. KATHĀS. 90, 64. ŚĪB. D. 156 (pl.). Verabschiedung: राज° R. GOAR. 1, 16 in der Unterschr.

संप्रीष (von 1. इष् with संप्र) m. Aufforderung, Anweisung an fungierende Priester H. 1520, v. l. ÇĀT. B. 1, 2, 5, 21. 3, 9, 3, 16. KĀT. Ç. 8, 8, 32. ऀCV. Ç. 2, 16, 2. 19, 18. 4, 7, 2. 6, 14, 13. 9, 7, 21. LĪT. 1, 2, 18. KAUC. 60. वालखिल्याः ससंप्रीषाः (so) Verz. d. Oxf. H. 56, a, 8.

संप्रोक्षण 1) n. = प्रोक्षण Besprengung Verz. d. Oxf. H. 103, a, 26. — 2) f. ई = प्रोक्षणी Wehwasser KAUC. 40. 80. 83.

संज्ञव (von झु mit सम्) m. 1) Zusammenfluss der Gewässer, Fluth, Sind-fluth BHĀG. P. 12, 4, 33. सागरस्य das Anschwellen des Meeres HARIV. 13811. सागर° R. 1, 32, 17. उदधि° BuĀC. P. 1, 3, 15. 10, 14, 13 (nach dem Comm. hier Zusammenfluss aller Meere). अतिनीतिसंज्ञवजलैः KĀM. NITIS. 64, 16. आनन्दसंज्ञवे लीनः BuĀC. P. 1, 6, 18. — 2) Zusammenfluss so v. a. zusammengehaltte, dichte Masse, grosse Menge: मेघानाम् MBh. 7, 833. अघ° R. 6, 19, 69. SUÇR. 2, 317, 3. VARĀH. BṚH. S. 21, 24 (pl.). महेत्त्वानाम् M. 4, 103. वियुत्स्तनित° JĪGĀ. 1, 149. मक्तास्त्र° MBh. 7, 6175. चक्रलाङ्गल° HARIV. 5596. कंस° (pl.) R. 1, 44, 24 (45, 19). आनन्द° adj. BHĀG. P. 10, 83, 4. अघ° 12, 12, 51. आरुव° so v. a. Schlachtgetümmel HARIV. 5032. रणा° dass. R. 7, 28, 41. — 3) Untergang im Wasser, Untergang, Ruin überh.: न ययो संज्ञवं मक्ती HARIV. 12375 = VP. 1, 4, 46 = MĀRK. P. 47, 10. देश° MBh. 13, 1626. लोकानाम् HARIV. 7207. ज्वगमाः संज्ञवं गताः 3910. विश्व° BHĀG. P. 3, 17, 15. भूतानाम् MBh. 8, 3270. BHĀG. P. 12, 8, 3. आभूतसंज्ञवम् MBh. 3, 188. WILSON, ŚĪMKEBJAK. S. 15. यावदाभूतसंज्ञवम् Spr. (II) 4857, v. l. 6205. st. आभूत° findet man hier und da